

रॉबर्ट वानॉय , बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 9

सच्चे पैगम्बरों के लिए मान्यता मानदंड

VI. सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्यता मानदंड

पिछले सप्ताह हम सच्चे या झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रश्न पर विचार कर रहे थे और यह भी देख रहे थे कि इस्राएली इन दोनों के बीच अंतर कैसे कर सकते हैं। जैसा कि मैंने जोर दिया, वह कुछ था प्राचीन इस्राएलियों के लिए इसका बहुत महत्व था क्योंकि उन्हें भविष्यवक्ता के वचन को सुनने के लिए जवाबदेह ठहराया गया था। इसलिए हम रोमन अंक VI, "सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्य मानदंड" को देख रहे थे और हमने ए, "पैगंबर के नैतिक चरित्र" पर कुछ महत्वपूर्ण के रूप में चर्चा की थी, लेकिन कुछ ऐसा जो अपने आप में एक साधन के रूप में पूरी तरह से पर्याप्त नहीं था। सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने के लिए। बी के साथ भी ऐसा ही, "चिह्न और चमत्कार।" हम संकेतों और चमत्कारों के महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि प्रभु अक्सर अपने प्रवक्ता को प्रमाणित करने के लिए संकेतों और चमत्कारों का उपयोग करना चुनते हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण मूसा के साथ है। "भविष्यवाणी की पूर्ति," सी., एक और महत्वपूर्ण मानदंड है क्योंकि केवल ईश्वर ही भविष्य की समग्रता को जानता है और उस पर नियंत्रण रखता है ताकि वह आने वाली चीजों के बारे में पहले से बता सके। लेकिन पृथक, सीमित स्थितियों में कुछ भविष्यवाणी हो सकती है जो एक झूठा भविष्यवक्ता कर सकता है। व्यवस्थाविवरण 13:1-3 इसका संकेत देता है, एक झूठा भविष्यवक्ता कुछ कह सकता है और ऐसा होता है, लेकिन जब वह कहता है, "आओ, यहोवा के बजाय किसी अन्य देवता का अनुसरण करें," तो उन्हें उसकी बात नहीं सुननी थी। हम वहीं से निकल पड़े।

4. पिछले रहस्योद्घाटन के लिए संदेश की अनुरूपता हमें 4 पर लाती है, " पिछले रहस्योद्घाटन के लिए संदेश की अनुरूपता।" मैंने हमारे पिछले सत्र के अंत में कहा था कि मुझे लगता है कि यह सत्यापन मानदंडों में सबसे महत्वपूर्ण है। मैं कहूंगा कि वस्तुनिष्ठ सत्यापन मानदंड में सबसे महत्वपूर्ण है, व्यक्ति के बाहर कुछ, क्योंकि यदि आप आगे देखें, तो संख्या 5 है, "ईश्वर की आत्मा द्वारा ज्ञानोदय", जो अधिक आंतरिक और व्यक्तिपरक है। यह ईश्वर जो कर रहा है उसके

प्रति ग्रहणशील रूप से हृदय और मस्तिष्क का खुलना है।

इसलिए "पिछले रहस्योद्घाटन के अनुरूप" के तहत, यदि कोई भविष्यवक्ता वास्तव में ईश्वर का प्रवक्ता है, तो उसका संदेश इस बात से सहमत होना चाहिए कि इज़राइल के पास कानून और पूर्ववर्ती भविष्यवक्ताओं दोनों में दिव्य रहस्योद्घाटन के क्षेत्र में पहले से ही क्या है। कानून परमेश्वर द्वारा मूसा के माध्यम से दिया गया था, पूर्ववर्ती भविष्यवक्ता परमेश्वर के प्रवक्ता थे; ईश्वर स्वयं का खंडन नहीं करेगा। इसलिए एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश पहले से दिए गए रहस्योद्घाटन के अनुरूप होना चाहिए। उससे कोई भी विचलन झूठी भविष्यवाणी का संकेत है। मैंने कहा है कि यह सत्यापन मानदंडों में सबसे महत्वपूर्ण है। यह एक कसौटी है जो प्राचीन इस्राएलियों के लिए सदैव उपलब्ध थी। उसे पूर्ति के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। मानक को किसी भी भविष्यवाणी के समय लागू किया जा सकता है। धारणा यह है कि प्रत्येक इस्राएली को कानून का और पिछले भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन के बारे में पर्याप्त ज्ञान हो सकता है ताकि वह जो संदेश सुन रहा था वह उस संदेश की अनुरूपता पर निर्णय ले सके जो पहले दिया गया था।

एक। Deut. 13 मुझे लगता है कि यह वास्तव में व्यवस्थाविवरण 13:1-3 का मानदंड है, जिसे हमने पिछले सप्ताह देखा, जहां हमने पढ़ा, "यदि कोई भविष्यवक्ता, या स्वप्न के द्वारा भविष्यवाणी करने वाला, तुम्हारे बीच प्रकट होता है और तुम्हें एक चमत्कारी चिन्ह या आश्चर्य की घोषणा करता है और यदि वह चिन्ह या चमत्कार, जिसकी उस ने चर्चा की है, घटित हो, और कहे, 'आओ हम पराये देवताओं के पीछे चलें, अर्थात् ऐसे देवताओं के पीछे चलें जिन्हें तुम नहीं जानते, और आओ हम उनकी उपासना करें,' तो तुम उसका वचन न सुनना। भविष्यवक्ता या वह भविष्यवक्ता।" आप देखिए, यह हमें जो बता रहा है वह यह है कि संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों को शिक्षा या सिद्धांत द्वारा आंका जाना चाहिए। यह वह सिद्धांत नहीं है जिसका मूल्यांकन संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों से किया जाता है। आप संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों को शिक्षा या सिद्धांत के आधार पर आंकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों का कोई कार्य नहीं है—वे करते हैं। मैं उन्हें खारिज नहीं करना चाहता क्योंकि उनका एक महत्वपूर्ण कार्य है, लेकिन अपने आप में वे पर्याप्त नहीं हैं।

बी। जेर. 28 मुझे लगता है कि यह मूल रूप से वही बात है जिसकी अपील यिर्मयाह ने यिर्मयाह 28 में हनन्याह के साथ उस टकराव में की थी। जैसा कि आप यिर्मयाह 28:8 को देखते हैं, जहां हनन्याह कह रहा था, "दो साल में तुम बेबीलोन से लौट आओगे," और यिर्मयाह कह रहा है, "नहीं, बन्धुवाई के समय बेबीलोनियों के अधीन हो जाओ।" अध्याय 28, श्लोक 8 में यिर्मयाह कहता है, "प्राचीन समय से जो भविष्यवक्ता आपसे और मुझसे पहले आए थे, उन्होंने कई देशों और बड़े राज्यों के खिलाफ युद्ध, आपदा और महामारी की भविष्यवाणी की है। लेकिन जो भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी करता है, उसे वास्तव में भगवान द्वारा भेजा गया एक ही माना जाएगा यदि उसकी भविष्यवाणी सच हो। दूसरे शब्दों में, हनन्याह को मुक्ति और शांति का यह संदेश दिया गया था और यिर्मयाह इस बिंदु पर हनन्याह के साथ अपनी चर्चा में संक्षेप में कह रहा है, "ठीक है, मुझे आशा है कि आप सही हैं।" आप पद 6 में देखिए वह कहता है, "आमीन! प्रभु ऐसा करें।" लेकिन आप श्लोक 7 में देखते हैं, "फिर भी, मुझे जो कहना है उसे सुनो। आप जो कह रहे हैं वह पूर्व भविष्यवक्ताओं ने जो कहा है उसके अनुरूप नहीं है। आपसे पहले जो भी भविष्यवक्ता हुए हैं, उन्होंने कई देशों के खिलाफ युद्ध, आपदा और प्लेग की भविष्यवाणी की है, लेकिन जो भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी करता है..." - विशेष रूप से एक देश और लोगों के लिए शांति, वे प्रभु के वचन पर नहीं चल रहे हैं या वचन की अवज्ञा कर रहे हैं प्रभु की और जिस पर न्याय के समय के बारे में लगातार कई भविष्यवक्ता बोलते रहे हैं।

यदि आप यिर्मयाह 6:13 पर वापस जाएँ और उसका अनुसरण करें, तो यिर्मयाह कहता है, "छोटे से लेकर बड़े तक, सभी बड़े लाभ के लालची हैं; भविष्यवक्ता और याजक, सभी छल करते हैं। वे मेरे लोगों के घावों पर ऐसे मरहम लगाते हैं मानो यह कोई गंभीर घाव ही न हो। 'शांति, शांति,' वे तब कहते हैं जब शांति नहीं होती। हनन्याह यही कर रहा था। "क्या वे अपने घृणित आचरण पर शर्मिंदा हैं? नहीं, उन्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं आती. वे शरमाना भी नहीं जानते।" इसलिए, यिर्मयाह पहले के भविष्यवक्ताओं से अपील करता है जो संकेत देते हैं कि उसकी भविष्यवाणी पहले के भविष्यवक्ताओं के शब्दों के साथ मेल खाती है जबकि हनन्याह की भविष्यवाणी का एक अलग चरित्र है और यही उसकी भविष्यवाणी को एक सच्चे भविष्यवक्ता के शब्द के रूप में चिह्नित नहीं करता

है। यही कारण है कि यिर्मयाह को अपनी बातों पर बहुत संदेह है। भविष्यवक्ताओं ने लगातार पापी पीढ़ी पर न्याय की घोषणा की है। इसलिए जब हनन्याह इस संदेश के साथ आता है जो पिछले भविष्यवक्ताओं के संदेश से भिन्न है, तो इसका मतलब है कि उसे भगवान द्वारा नहीं भेजा जा सकता है।

सी। यशायाह 8:19-20 यशायाह 8:19 और 20 में प्रभु अगला कथन कहते हैं, "जब मनुष्य तुम से ओझाओं और भूत-प्रेतों, जो फुसफुसाते और बुदबुदाते हैं, से परामर्श लेने को कहते हैं, तो क्या लोगों को अपने परमेश्वर से नहीं पूछना चाहिए? जीवितों की ओर से मृतकों से परामर्श क्यों करें? कानून के प्रति और साक्ष्य के प्रति! यदि वे इस वचन के अनुसार न बोलें, तो उन्हें भोर का प्रकाश नहीं मिलेगा।" हम कानून और गवाही का अध्ययन करते हैं और देखते हैं कि क्या पहले दिए गए खुलासों के अनुरूप है।

घ) इस मानदंड पर आपत्तियाँ

1)

अब, इस मानदंड पर कुछ आपत्तियों के बारे में क्या? कुछ लोग कह सकते हैं, "प्रकटीकरण अपनी प्रकृति से नई चीज़ों का अनावरण है। यदि वे नई चीज़ें हैं, तो उनका परीक्षण उस रहस्योद्घाटन द्वारा कैसे किया जा सकता है जो पहले ही दिया जा चुका है? यदि यह नया है, तो आप पहले से दिए गए रहस्योद्घाटन में कुछ समकक्ष कैसे पा सकते हैं? यह एक संभावित आपत्ति है। मुझे नहीं लगता कि यह उतना गंभीर है जितना शुरू में लग सकता है। मुझे नहीं लगता कि यह इतना गंभीर है क्योंकि मुझे लगता है कि मैंने पिछली बार कहा था, पुराने नियम में रहस्योद्घाटन कभी भी इसके पहले से पूरी तरह से अलग नहीं है। पुराने नियम में रहस्योद्घाटन जैविक विकास में उभरा। यह एक ऐसा विकास है जो पहले से ही रखी गई नींव पर आधारित है। प्रगति, हाँ, लेकिन यह उन्हीं जड़ों, एक ही तने से प्रगति है, जैसे-जैसे इसकी शाखाएँ निकलती हैं और यह फैलती और बढ़ती है। इसलिए जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है इसमें एक निरंतरता होती है। तो, मुझे ऐसा लगता है कि वह आपत्ति उतनी प्रबल नहीं है जितनी लग सकती है।

2) दूसरी आपत्ति जो आप उठा सकते हैं वह यह है कि यह ऐसी चीज़ नहीं है जो विशेष भविष्यवाणियों के विशिष्ट विवरणों के परीक्षण के लिए पर्याप्त है। उदाहरण के लिए, यशायाह का कहना है कि सन्हेरीब यरूशलेम को नहीं लेगा। वह एक विशिष्ट घटना है। सन्हेरीब की घेराबंदी। यशायाह ने कहा, "यह सफल नहीं होने वाला है।" बेशक, सन्हेरीब को यरूशलेम से पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। वास्तव में, सन्हेरीब के इतिहास में से एक में वह कहता है कि उसने "हिजकिय्याह को पिंजरे में बंद पक्षी की तरह बंद कर दिया," लेकिन वह यह नहीं कहता कि उसने उस पर विजय प्राप्त कर ली क्योंकि उसने उसे नहीं हराया। या यह भविष्यवाणी कि बन्धुवाई 70 वर्ष तक रहेगी, यही यिर्मयाह ने कहा था। आप पहले दिए गए रहस्योद्घाटन द्वारा उस जैसे विशिष्ट विवरण का परीक्षण कैसे कर सकते हैं? खासतौर पर अगर पहले किसी ने इस बारे में कुछ नहीं कहा हो कि कब तक कैद कायम रहेगी. मैं इसके साथ सोचता हूँ, यह सही है कि आप इस तरह के विशिष्ट विवरणों को उनके पूरा होने से पहले, पिछले रहस्योद्घाटन के साथ तुलना करके सही या गलत के रूप में स्थापित नहीं कर सकते क्योंकि उन विशिष्ट विवरणों पर कोई पिछला रहस्योद्घाटन नहीं था। हालाँकि, फिर भी, वे विवरण अलग से प्रकट नहीं होते हैं। आपको एक बड़ी भविष्यवाणी के संदर्भ में ऐसे विवरण मिलेंगे। व्यापक संदर्भ में मुझे लगता है कि उन्हें अपनी मान्यता मिल गई है।

आप पाएंगे कि अक्सर नहीं, दीर्घकालिक भविष्यवाणी को अल्पकालिक भविष्यवाणी द्वारा मान्य किया जाता है। श्रोता अल्पकालिक भविष्यवाणी की पूर्ति का निरीक्षण कर सकते हैं और दीर्घकालिक भविष्यवाणी के लिए इसके माध्यम से मान्यता प्राप्त कर सकते हैं। आपको 1 राजा 13 में याद है जहां वह आदमी जो यहूदा से निकला था, बेतेल में वेदी के पास जाता है और वेदी के खिलाफ भविष्यवाणी करता है। उस भविष्यवाणी के संदर्भ में वह कहते हैं, विभाजित राज्य काल के इस समय में, कि योशिय्याह उस वेदी पर झूठे पुजारियों की हड्डियों को जला देगा। यह 900 ईसा पूर्व की बात है और आप तीन शताब्दी बाद की बात कर रहे हैं। उन्होंने योशिय्याह का नाम लेकर उल्लेख किया। आप पिछले रहस्योद्घाटन द्वारा इसे कैसे मान्य कर सकते हैं? खैर, आप नहीं कर सकते। लेकिन उसी अध्याय में वह कुछ और बातें भी कहते हैं होने वाले हैं। यदि आप पद 3 को देखें, तो वह कहता है, "उसी दिन परमेश्वर के जन ने एक चिन्ह दिया, कि प्रभु ने घोषणा की है कि

वेदी टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, और उस पर की राख उड़ेल दी जाएगी" और वही हुआ, उसी दिन दिन। "जब राजा यारोबाम ने बेतेल की वेदी के साम्हने परमेश्वर के भक्त की चिल्लाहट सुनी, तब उसने अपना हाथ बढ़ाकर कहा, "उसे पकड़ लो!" परन्तु जो हाथ उसने उस आदमी की ओर बढ़ाया वह सिकुड़ गया था, इसलिए वह उसे वापस नहीं खींच सका। और वेदी फट गई, और राख फैल गई।" तब यारोबाम ने परमेश्वर के उस जन से प्रार्थना की, और परमेश्वर के उस जन ने यहूदा में से उसके लिये बिनती की, और उसका हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। वहाँ दो संकेत प्रदर्शित किए गए हैं जो उसी दिन पूरे हुए थे जिस दिन यह दीर्घकालिक भविष्यवाणी की गई थी। दीर्घकालिक भविष्यवाणी का प्रमाणीकरण अल्पावधि भविष्यवाणी की पूर्ति के अवलोकन से किया जाता है। तो हां, कुछ हद तक आप पिछले रहस्योद्घाटन द्वारा दी गई भविष्यवाणी की सभी विशिष्टताओं का परीक्षण नहीं कर सकते हैं। लेकिन आम तौर पर वे विशिष्टताएँ एक ऐसे संदर्भ में होती हैं, जो किसी न किसी रूप में, संपूर्ण को भगवान के शब्द के रूप में स्वीकार करने के लिए पर्याप्त मान्यता प्रदान करती है।

3)

जब आप बाइबिल अध्ययन में जाते हैं, तो वहाँ विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं, चाहे वे यहूदी हों, प्रोटेस्टेंट हों, कैथोलिक हों या कुछ और। मैंने पहले इसका उल्लेख नहीं किया था, लेकिन उदाहरण के लिए, यदि आप वाल्टर ब्रूगेमैन को देखें - जो प्रोटेस्टेंट हैं, लेकिन इंजीलवादी नहीं हैं - उन्होंने 1999 में *पुराने नियम का धर्मशास्त्र लिखा* था, लेकिन उस धर्मशास्त्र में वह पुराने नियम के पैगंबरों के बारे में कहते हैं, " वे अधिकार का दावा करते हैं जिसे सत्यापित करना असंभव है। वह कहते हैं, "विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि ऐसे मुद्दे के लिए कोई वस्तुनिष्ठ मानदंड नहीं हैं।" मुझे यकीन है कि यहूदी विद्वानों में से कुछ ऐसा कुछ कहेंगे, फिर भी कुछ कहेंगे कि इस प्रकार के मानदंड इसके लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं। मुझे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ईश्वर स्वयं व्यवस्थाविवरण 18 में इस्राएल से कह रहा है कि "तुम्हारे पास भविष्यवक्ता के वचन के जवाब में अपने व्यवहार के लिए जवाबदेह ठहराए जाने के लिए पर्याप्त आधार है।"

विद्यार्थी प्रश्न: यहजेक 18:1-4 बच्चों पर माता-पिता के पाप (cf. उदाहरण 20)

विद्यार्थी प्रश्न: क्या आप यहजेकेल 18 पर टिप्पणी कर सकते हैं जहां निर्गमन 20 और दस आज्ञाओं के विपरीत, यह कहा गया है कि पिता के पापों का फल बच्चों पर नहीं पड़ेगा?

आप जानते हैं, यह निर्गमन 20 छंद 4 और 5 में दस आज्ञाओं पर वापस जाता है। क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके अधर्म का दण्ड बच्चों को, वरन तीसरी, चौथी पीढ़ी को भी देता हूँ। फिर जैसा कि आपने यहजेकेल 18:1-4 में कहा है, तात्पर्य यह है कि आप अपने स्वयं के पापों के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन आपको अपने पूर्वजों के पापों के लिए दंडित नहीं किया जाएगा। उदाहरण के लिए, श्लोक 3 में, "मेरे जीवन की शपथ," परमप्रधान प्रभु की यह वाणी है, 'अब तुम इस्राएल में इस कहावत को उद्धृत नहीं करोगे। क्योंकि हर जीवित प्राणी मेरा है, पिता और पुत्र दोनों एक समान मेरे हैं। जो आत्मा पाप करता है वही मरेगा।' यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा: 'इस्राएल देश के विषय में यह कहावत कहने से तुम लोगों का क्या अभिप्राय है: 'खट्टे अंगूर तो बाप खाते हैं, और दांत खट्टे होते हैं पुत्रों के'?" दूसरे शब्दों में, पिता कुछ करो और इसका खामियाजा बच्चों को भुगतना पड़ेगा। आप यह कहावत क्यों उद्धृत कर रहे हैं?

मुझे यकीन नहीं है कि मैं इसे हल कर सकता हूँ, लेकिन मुझे लगता है, इसका वह हिस्सा यह है: जब आप निर्गमन 20 में वापस जाते हैं, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक जो वास्तव में उस संस्कृति में एक घर है। परदादा, परदादा, पिता और बच्चे एक ही घर में रहते थे, ताकि एक का पाप सभी को प्रभावित करे। मुझे ऐसा लगता है कि यह निर्गमन 20 अवधारणा में शामिल है। जबकि ईजेकील 18 में, मुझे लगता है कि यहां जिस बात को संबोधित किया जा रहा है वह वे लोग हैं जो इसे अपने दुर्व्यवहार के लिए एक बहाने के रूप में उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, हम कष्ट क्यों उठाते हैं? हमने कुछ भी गलत नहीं किया. किसी और ने कुछ गलत किया है और हमें उसकी सजा मिल रही है।' मुझे लगता है कि ईजेकील जो कह रहा है वह यह है कि अपनी जिम्मेदारी लें। यह कहने की कोशिश न करें, "चीजें जैसी हैं, उसका कारण किसी और ने किया है। अपनी जिम्मेदारी खुद लीजिए।" इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि यह विरोधाभास इतना तीव्र है, "यहां एक रहस्योद्घाटन है, और यहां एक और है जो इसका खंडन करता है।"

4. अल्पावधि भविष्यवाणी दीर्घावधि की पुष्टि करती है - जेर 26-28

आइए उन उदाहरणों पर वापस जाएं जिनकी हम तलाश कर रहे थे, अल्पकालिक भविष्यवाणियों के जो भविष्यवाणी की विशिष्टताओं के संबंध में दीर्घकालिक भविष्यवाणियों को मान्य कर सकते हैं। यदि आप यिर्मयाह 27 और 28 में हनन्याह और यिर्मयाह के पास जाते हैं, तो एक इस्राएली कैसे जान सकता है कि हनन्याह की बाबुल के जुए को तोड़ने की भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणी झूठी थी और यिर्मयाह की भविष्यवाणी जिसने बाबुल के जुए के जारी रहने की भविष्यवाणी की थी वह सच थी? मुझे लगता है कि आम तौर पर आप वही कर सकते हैं जो अतिरिक्त रहस्योद्घाटन मिलने से पहले यिर्मयाह ने स्वयं किया था, और वह यह है कि हनन्याह एक अपश्चातापी लोगों पर शांति की भविष्यवाणी कर रहा है, इसलिए उसका संदेश संदिग्ध है। दूसरी ओर, यिर्मयाह एक विद्रोही लोगों पर फैसले की भविष्यवाणी कर रहा है जो आम तौर पर बाइबिल के रहस्योद्घाटन के अनुरूप है। श्रोताओं को केवल यह आश्चस्त करने की आवश्यकता थी कि भविष्यवाणी अपनी मूल विशेषताओं में भगवान द्वारा पहले ही कही गई बातों से मेल खाती है। यह संदेश उस बात से मेल खाता है जो पिछले भविष्यवक्ता उन्हें बताते रहे हैं। उस अर्थ में, जो विवरण अपने आप में अप्राप्य हो सकते हैं, उन्हें बड़े संदर्भ में अपना स्थान ढूंढकर मान्य किया जाता है। लेकिन इस उदाहरण में भी, जब प्रभु अध्याय 28 के अंत में एक अतिरिक्त संदेश देकर यिर्मयाह से बात करते हैं, तो यिर्मयाह ने पद 15 में कहा, “हनन्याह सुनो! यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा है, फिर भी तुमने इस राष्ट्र को झूठ पर भरोसा करने के लिए उकसाया है। इसलिये यहोवा यों कहता है, मैं तुम को पृथ्वी पर से उठा लेने पर हूं। इसी साल तुम मरने वाले हो” और 2 महीने बाद वह मर गया। अल्पकालिक भविष्यवाणी का सत्यापन था - आप लंबी भविष्यवाणियों में देख सकते हैं।

यिर्मयाह 26 में संदेश अध्याय 7, मंदिर उपदेश में यिर्मयाह के संदेश के समान है। परन्तु 26:4-6 में, यिर्मयाह मन्दिर के आँगन में है, "उन से कह, 'यहोवा यों कहता है: यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं करोगे, जो मैं ने तुम्हारे साम्हने रखी है, और यदि तुम मेरे दास भविष्यवक्ताओं की बातें न सुनोगे, जिन्हें मैं ने बार बार तुम्हारे पास भेजा है, तौभी तुम ने न सुनी, तो मैं इस भवन को शीलो के समान और इस नगर को सब जातियों के बीच शाप का कारण

बनाऊंगा। पृथ्वी।" मंदिर के विनाश का वह संदेश है जो कई इस्राएलियों के लिए लगभग निंदनीय होगा जिन्होंने मंदिर में महिमा की, भले ही उन्होंने प्रभु का अनुसरण नहीं किया। तो प्रतिक्रिया क्या है? श्लोक 7-11 में आप पढ़ते हैं, "याजकों, भविष्यवक्ताओं और सभी लोगों ने यिर्मयाह को प्रभु के भवन में ये शब्द बोलते हुए सुना। परन्तु जैसे ही यिर्मयाह सब लोगों को वह सब बता चुका जो यहोवा ने उसे कहने की आज्ञा दी थी, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं और सब लोगों ने उसे पकड़ लिया और कहा, 'तुम्हें अवश्य मरना चाहिए! तुम यहोवा के नाम पर यह भविष्यवाणी क्यों करते हो, कि यह भवन शीलो के समान होगा, और यह नगर उजाड़ और सुनसान हो जाएगा?' और सब लोग यहोवा के भवन में यिर्मयाह के चारों ओर इकट्ठे हो गए। जब यहूदा के हाकिमों ने ये बातें सुनीं, तब वे राजभवन से यहोवा के भवन में गए, और यहोवा के भवन के नये फाटक के द्वार पर खड़े हो गए। तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से कहा, इस मनुष्य को प्राणदण्ड दिया जाना चाहिए क्योंकि उस ने इस नगर के विरुद्ध भविष्यद्वक्ता की है। आपने इसे अपने कानों से सुना है।" तो प्रतिक्रिया है। यहोवा ने यिर्मयाह को सन्देश दिया। उसने उन लोगों को संदेश दिया जो उसे मारने के लिए तैयार थे।

यिर्मयाह कैसे प्रतिक्रिया देता है? श्लोक 12 से 15 में आपको यिर्मयाह की प्रतिक्रिया मिलती है, वह अपना बचाव करता है, "तब यिर्मयाह ने सभी अधिकारियों और लोगों से कहा, 'प्रभु ने मुझे भविष्यवाणी करने के लिए भेजा है इस घर और इस नगर के विरुद्ध जितनी बातें तुम ने सुनी हैं। अब अपने चालचलन और काम सुधारो, और यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा मानो। तब प्रभु नरम पड़ जाएंगे।" श्लोक 13 इस बारे में बात करता है, "यदि लोग नरम पड़ जाएं तो मैं भी नरम पड़ जाऊंगा।" तो वह कहते हैं, "पश्चात्ताप करो, अपने तरीके, अपने कार्य सुधारो। तब यहोवा पछताएगा और वह विपत्ति नहीं लाएगा जो उसने तुम्हारे विरुद्ध घोषित की है।" श्लोक 14, "जहाँ तक मेरी बात है, मैं तेरे हाथ में हूँ; तुम्हें जो अच्छा और उचित लगे वही मेरे साथ करो।" लेकिन फिर चेतावनी, "हालाँकि, आश्वस्त रहो, कि यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो तुम अपने ऊपर और इस शहर पर और इसमें रहने वालों पर निर्दोष खून का दोष लगाओगे, क्योंकि सच में प्रभु ने मुझे भेजा है तुझ से ये सब वचन तेरे सुनने में कहने को। कुंआ, यह एक तरह से अधिकारियों को थोड़ा पीछे ले जाता है। फिर आप श्लोक 16 में पढ़ते हैं, "तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और भविष्यद्वक्ताओं से

कहा, 'इस मनुष्य को मार डाला न जाए, इसने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से कहा है।'" लेकिन इसके बाद क्या हुआ मैं आपका ध्यान इसी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। "देश के कुछ पुरनियों ने आगे बढ़कर लोगों की पूरी सभा से कहा, ' यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में मोरेशेत के मीका ने भविष्यवाणी की थी। उस ने यहूदा के सब लोगों से कहा, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, सिव्योन खेत की नाईं जोता जाएगा, यरूशलेम मलबे का ढेर, और मन्दिर की पहाड़ी झाड़ियों से ऊंचा टीला बन जाएगी। क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने या यहूदा में किसी और ने उसे मार डाला? क्या हिजकिय्याह ने यहोवा का भय नहीं माना और उसका अनुग्रह नहीं चाहा? और क्या यहोवा न पछताया, कि उस ने वह विपत्ति न डाली जो उस ने सुनाई थी? हम अपने ऊपर एक भयानक आपदा लाने वाले हैं!" तो आप देखिए कि वहां क्या हुआ, उन्होंने यिर्मयाह के संदेश की तुलना मीका के संदेश से की और जो मीका ने बहुत समय पहले कहा था और जो यिर्मयाह कह रहा था, उसके बीच एकरूपता थी। मीका लगभग 735 ईसा पूर्व में रहता था, यिर्मयाह लगभग 609 में। इसलिए सौ साल से भी पहले एक भविष्यवक्ता हुआ था जिसके पास एक ही संदेश था और वह यिर्मयाह के संदेश को मान्य करता था क्योंकि यह उसी के अनुरूप था जो उन्होंने पहले सुना था। तो यह संख्या 4 का निष्कर्ष है, "पिछले रहस्योद्घाटन के संदेश की अनुरूपता।"

5. परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन आइए 5 पर चलते हैं और वह है, "परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन।" इस बिंदु तक, हम इस बारे में बात कर रहे थे कि हम "सत्यापन के वस्तुनिष्ठ मानदंड" को क्या कह सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि उन सभी वस्तुनिष्ठ मानदंडों के साथ, आपके पास सच्ची और झूठी भविष्यवाणी को अलग करने में पूर्ण निश्चितता की स्वचालित या यांत्रिक मोहर नहीं है। वे ऐसा प्रदान नहीं करते हैं, क्योंकि उन वस्तुनिष्ठ मानदंडों में ईश्वर की आत्मा की आंतरिक प्रबुद्धता को जोड़ा जाना चाहिए। सत्य को देखने की आंख तो होनी ही चाहिए.

ए) देउत। 29:2-4 व्यवस्थाविवरण 29:2-4 में मूसा कुछ दिलचस्प बात कहता है। जिन लोगों ने मिस्र से मुक्ति के समय परमेश्वर के पराक्रम के कार्य देखे थे, उनके लिए वह कहता है, "जो कुछ यहोवा ने मिस्र में फिरौन, उसके हाकिमों, और उसके सारे देश के साथ किया वह सब तुम ने अपनी

आंखों से देखा है; महान परीक्षण, वे चमत्कारी चिन्ह और महान चमत्कार। ” और यहाँ बात यह है, “आज तक, प्रभु ने तुम्हें समझने वाला दिमाग या देखने वाली आँखें या सुनने वाले कान नहीं दिए हैं।” तुमने इसे अपनी आँखों से देखा है, परन्तु प्रभु ने तुम्हें समझने वाला दिमाग या देखने वाली आँखें या सुनने वाले कान नहीं दिये हैं। उन्होंने विपत्तियों में और लाल सागर के माध्यम से इस्राएल की मुक्ति में परमेश्वर की शक्तिशाली शक्ति देखी थी। लेकिन इसका परिणाम उनके निर्माता और मुक्तिदाता के रूप में यहोवा के सामने झुकना नहीं था। तो उन्होंने देखा, परन्तु उन्होंने नहीं देखा। मुझे लगता है कि इन सत्यापन मानदंडों के साथ भी कार्य करता है , चाहे वह पिछले रहस्योद्घाटन या संकेतों और चमत्कारों के अनुरूप हो, भविष्यवाणी की पूर्ति हो , या पैगंबर का नैतिक चरित्र हो। जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका सही उपयोग करने के लिए यह आवश्यक था कि परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा उनकी आँखें खोली जाएँ । जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका सही उपयोग करने के लिए, परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन अपरिहार्य है। मुझे ऐसा लगता है कि जहाँ ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन मौजूद है, वहाँ इस्राएली, वस्तुनिष्ठ सत्यापन मानदंडों के माध्यम से, विश्वास और निश्चितता के साथ सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कर सकते हैं। जहाँ परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन का अभाव था, वहाँ उस प्रकार की निश्चितता और अंतर्दृष्टि का भी अभाव था।

मुझे लगता है कि वस्तुनिष्ठ दिव्य रहस्योद्घाटन में गुमराह होने के हर बहाने को दूर करने के लिए पर्याप्त रोशनी है। लेकिन, और यह आज भी उतना ही सत्य है जितना पुराने नियम के काल में था, मनुष्य की पापी प्रकृति के कारण और मनुष्य की सत्य को दबाने की दृढ़ इच्छा के कारण। आप जो पाते हैं वह यह है: परमेश्वर की आत्मा के बिना मनुष्य जानबूझकर उस चीज़ से दूर हो जाते हैं जो उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत की जाती है। इसलिए हर बहाने को दूर करने के लिए पर्याप्त रोशनी थी लेकिन भगवान की आत्मा द्वारा प्रबुद्धता महत्वपूर्ण थी ताकि जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका उचित तरीके से उपयोग किया जा सके। और इसी कारण से, झूठे पैगम्बरों का अनुसरण करने पर लोगों की निंदा की गई और उन्हें जिम्मेदार ठहराया गया। वे उस प्रकाश का जवाब देने के लिए जिम्मेदार थे जो उन्हें दिया गया था, जो पर्याप्त था लेकिन जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसे प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिल और दिमाग को खोलने की भी

आवश्यकता थी।

ख) आवेदन प्रस्तुत करें

कुछ लोग इस पर टिप्पणी करते हैं कि इसका वर्तमान समय से क्या संबंध हो सकता है। बेशक, यह एक धार्मिक मुद्दा बन जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में, वह स्थान जहां हम स्वयं को मुक्तिदायी इतिहास की प्रगति में पाते हैं - वह मुद्दा जिसका प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे पैगम्बरों के बीच अंतर करने का सामना करना पड़ा था - मुझे नहीं लगता कि यह अस्तित्व में है हमें इस अर्थ में कि इसने प्राचीन इस्राएलियों के लिए किया था। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि भगवान के रहस्योद्घाटन के पूरा होने और पुराने और नए नियम के धर्मग्रंथों में इसके निर्धारण के बाद से, अब जो कुछ भी है उसे इस अर्थ में भविष्यवाणी माना जाएगा कि यह पुराने नियम की अवधि में दिया गया था।, कुछ ऐसा है जिस पर पहले से ही मुहर लगा दी गई है या सच होने के रूप में चिह्नित किया गया है, क्योंकि रहस्योद्घाटन पूरा हो गया है, यह जारी नहीं है। मैं पवित्रशास्त्र के सिद्धांत के पूरा होने के साथ आज निरंतर रहस्योद्घाटन की आशा नहीं करता। मुझे ऐसा लगता है कि हमारे समय में समस्या एक अलग रूप में दिखाई देती है और वह यह है कि हम बाइबिल के सत्य को सत्य के अन्य दावों से कैसे अलग कर सकते हैं। अब हम जानते हैं कि पवित्रशास्त्र में निहित ईश्वर का रहस्योद्घाटन वास्तव में ईश्वर का रहस्योद्घाटन है, और यह आपको क्षमाप्रार्थी के प्रश्न के पूरे मुद्दे से परिचित कराता है, और आप ईसाई धर्म की सत्यता और बाइबिल के रहस्योद्घाटन की सत्यता के लिए तर्क कैसे दे सकते हैं और उसके लिए किन तर्कों की अपील की जा सकती है। आप देखिए, यह उस मुद्दे से भिन्न है जिसका विशेष रूप से पुराने नियम के काल में सामना किया गया था।

1. वोस: मैं इसमें वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक पहलुओं का पालन करता हूँ, काफी हद तक गीरहार्डस वोस के मॉडल में, यदि आप अपने उद्धरणों को देखते हैं, पृष्ठ 10, वहां उस पर एक पैराग्राफ है, मैं इसे पढ़ने नहीं जा रहा हूँ। लेकिन यदि आप जानते हैं, तो रहस्योद्घाटन और मुक्ति के अपने मॉडल में, वह अपने उद्देश्य-केंद्रीय पहलू के साथ-साथ व्यक्तिपरक-व्यक्तिगत पहलू में

भी रहस्योद्घाटन की बात करते हैं। उनका कहना है कि जैसे-जैसे ईश्वर मुक्ति की अपनी योजना को आगे बढ़ाता है, रहस्योद्घाटन भी उसके साथ-साथ आगे बढ़ता है, वास्तव में ईश्वर मुक्ति के लिए क्या कर रहा है, उस पर टिप्पणी या स्पष्टीकरण। रहस्योद्घाटन मुक्तिबोध इतिहास के उस उद्देश्य-केंद्रीय आंदोलन के साथ है। तो आपको निर्गमन के साथ रहस्योद्घाटन मिलता है, आपको मसीह के पहले आगमन के साथ भारी मात्रा में रहस्योद्घाटन मिलता है। लेकिन जब मसीह आता है, और रहस्योद्घाटन का उद्देश्य-केंद्रीय आंदोलन पहलू निष्कर्ष पर आता है, तो रहस्योद्घाटन बंद हो जाता है। यह रहस्योद्घाटन के इस व्यक्तिपरक-व्यक्तिगत प्रकार के अनुप्रयोग की ओर बढ़ता है। यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 9 और 10 को देखें, तो अब वह मुझसे कहीं अधिक बेहतर शब्द लिखता है। उनके मॉडल से, वह बिंदु जहां रहस्योद्घाटन जारी रह सकता है वह मसीह के दूसरे आगमन के साथ होगा। वहां आपको मुक्तिबोध इतिहास की प्रगति में एक और प्रमुख आंदोलन मिलता है। यह रहस्योद्घाटन के साथ हो सकता है, और यह निश्चित रूप से संभव है। हो सकता है कि आप पृष्ठ 10 के नीचे का लगभग दो-तिहाई भाग देख सकें अनुच्छेद, "अब रहस्योद्घाटन केवल उद्देश्य-केंद्रीय मोचन की प्रक्रिया के साथ होता है, और यह बताता है कि मोचन रहस्योद्घाटन से आगे क्यों बढ़ता है।" और फिर यह आखिरी पैराग्राफ. "भविष्य में केवल एक ही युग है जब हम वस्तुनिष्ठ-केंद्रीय मुक्ति फिर से शुरू होने की उम्मीद करेंगे, वह मसीह का दूसरा आगमन है। उस समय महान मुक्तिदायी कार्य घटित होंगे। ”

2. बाविनक रहस्योद्घाटन मसीह में अपने अंत तक पहुंच गया यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 8 पर वापस जाते हैं, तो मेरे पास हरमन बाविनक के *रिफॉर्मड डॉगमैटिक्स* से कुछ पैराग्राफ हैं, जो वर्तमान में दिलचस्प हैं। वह 1900 के आरंभ में डच भाषा में प्रकाशित हुआ था और पिछले कुछ वर्षों तक इसका कभी अनुवाद नहीं किया गया था। यह अभी अनुवादित और प्रकाशित होने की प्रक्रिया में है। मुझे लगता है कि चार खंडों में से दो या तीन का अनुवाद किया जा चुका है। लेकिन इस प्रश्न पर उनकी कुछ टिप्पणियों का खंड 1 से यह मेरा अपना अनुवाद है। वह कहते हैं, "प्रकाशितवाक्य, समग्र रूप से देखा जाए तो, सबसे पहले मसीह के आगमन में अपने अंत और उद्देश्य तक पहुंचा। लेकिन यह दो महान अवधियों में, दो अलग-अलग व्यवस्थाओं में पड़ता है।

पहली अवधि ने मानवता के इतिहास में ईश्वर के पूर्ण रहस्योद्घाटन को शामिल करने का काम किया। संपूर्ण अर्थव्यवस्था को ईश्वर का अपने लोगों के पास आना, मसीह के लिए एक तम्बू की तलाश के रूप में माना जा सकता है। इस प्रकार यह मुख्य रूप से मसीह में ईश्वर का रहस्योद्घाटन है। यह एक वस्तुनिष्ठ चरित्र धारण करता है। इसकी विशेषता असाधारण कार्य, थियोफनी, भविष्यवाणी और चमत्कार हैं जिनके माध्यम से भगवान अपने लोगों के पास आते हैं। मसीह इसकी सामग्री और बिंदु है। वह लोगो है, जो अंधेरे में चमकता है, अपने पास आता है और यीशु में देह बन जाता है। पवित्र आत्मा अभी तक नहीं था, क्योंकि मसीह की अभी तक महिमा नहीं हुई थी। इस अवधि में शिलालेखीकरण (यह वोस जैसी ही अवधारणा है) रहस्योद्घाटन के अनुरूप था। दोनों एक सदी से दूसरी सदी तक बढ़ते गए। जिस हद तक रहस्योद्घाटन आगे बढ़ा, पवित्रशास्त्र का दायरा बढ़ता गया। जब मसीह में ईश्वर का पूर्ण रहस्योद्घाटन दिया गया है, थियोफनी, भविष्यवाणी और आश्चर्य उसमें अपने उच्च बिंदु पर पहुंच गए हैं और मसीह में ईश्वर की कृपा सभी मनुष्यों पर प्रकट हुई है, तो, उसी समय, इसका समापन भी होता है धर्मग्रंथ। मसीह ने अपने व्यक्तित्व और कार्य में पिता को पूरी तरह से हमारे सामने प्रकट किया है, इसलिए वह रहस्योद्घाटन हमारे लिए पवित्रशास्त्र में पूरी तरह से वर्णित है। पुत्र की अर्थव्यवस्था आत्मा की अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करती है। वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन व्यक्तिपरक अनुप्रयोग में बदल जाता है। फिर से यह बहुत समान है, कुछ अलग शब्द, वही अवधारणा, वोस के रूप में, "मसीह में इतिहास के बीच में भगवान द्वारा एक जैविक केंद्र बनाया गया है, इस केंद्र से रहस्योद्घाटन की रोशनी लगातार व्यापक मंडलियों में चमकती है... पवित्र आत्मा मसीह से सब कुछ लेता है, वह रहस्योद्घाटन में कुछ भी नया नहीं जोड़ता है। यह पूर्ण है और इसलिए इसे बढ़ा करने में सक्षम नहीं है। मसीह शब्द है, अनुग्रह और सत्य से भरपूर; उसका काम पूरा हो गया है, पिता स्वयं अपने काम में रहता है, संतों के अच्छे कार्यों में एक शब्द भी जोड़ा या बढ़ाया नहीं जाता है, परंपरा से नहीं, बल्कि उसके व्यक्ति द्वारा, पोप द्वारा नहीं। मसीह में, भगवान ने खुद को पूरी तरह से प्रकट किया है और खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया है, इसलिए पवित्रशास्त्र भी पूर्ण है। यह परमेश्वर का संपूर्ण वचन है। भले ही रहस्योद्घाटन पूरा हो गया है। काम नहीं रुकता. "सुधार ने पूर्णता और पर्याप्तता को स्वीकार किया रोमन सिद्धांत के विरुद्ध पवित्रशास्त्र का।" उस अंतिम अनुच्छेद के 2/3

भाग से नीचे जाएँ। “पवित्र धर्मग्रंथ की पर्याप्तता भी यहीं से प्रवाहित होती है नये नियम की व्यवस्था की प्रकृति. मसीह ने देहधारण किया और अपना कार्य पूरा किया। वह ईश्वर का अंतिम और सर्वोच्च रहस्योद्घाटन है। उसने हमें पिता घोषित किया। उसके द्वारा परमेश्वर ने अंतिम दिनों में हमसे बात की है। वह सर्वोच्च, एकमात्र पैगम्बर है। जब यीशु ने अपना काम पूरा किया तो उसने पवित्र आत्मा को भेजा जो रहस्योद्घाटन में कुछ नया नहीं जोड़ता, बल्कि परमेश्वर के लोगों को तब तक सच्चाई में ले जाता है जब तक कि वे परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में विश्वास की एकता तक नहीं पहुंच जाते।

3. आधुनिक अनुप्रयोग अब मैंने कहा कि यह धर्मशास्त्रीय है। मैं उस तरह के मुद्दे की तलाश में नहीं हूँ जिसका सामना आज हम कर रहे हैं जहां हम लोगों को भविष्यवक्ता बनने की कोशिश करते हुए सुन रहे हैं और उन्हें वही समस्या है जो प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने में थी। चूँकि आज ऐसे लोग हैं और चूँकि रहस्योद्घाटन का समापन हो रहा है, इसलिए उन पर स्वतः ही झूठ का ठप्पा लग जाता है। अब यदि आप उस तरह के धार्मिक निर्माण को स्वीकार नहीं करते हैं और रहस्योद्घाटन की निरंतरता के संबंध में एक खुला दृष्टिकोण रखते हैं तो आप उसी मॉडल पर वापस जा सकते हैं जिसका उपयोग पुराने नियम के लोग करते थे: आप संकेतों और चमत्कारों को देखते हैं, आप देखते हैं पैगम्बर का नैतिक चरित्र, आप भविष्यवाणी और पूर्ति, और पिछले रहस्योद्घाटन के अनुरूपता की तलाश करते हैं। क्या यह पवित्रशास्त्र में कही गई बातों के अनुरूप है? आप पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता को देखें। आप वैसे ही काम करते हैं। मैं यह कहने का इच्छुक नहीं हूँ कि आज हम उसी स्थिति में हैं।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मैं कहूंगा कि नये नियम में आप संक्रमण काल में हैं। जब आरंभिक चर्च इस बात पर काम कर रहा था कि दिए गए इस रहस्योद्घाटन को कैसे लिया जाए और इसे नई अर्थव्यवस्था में कैसे लागू किया जाए जो जोर पकड़ रही थी, तब भगवान के लोगों की इस राष्ट्रीय इकाई इज़राइल के साथ पहचान होने और अब एक आध्यात्मिक निकाय बनने से एक बड़ा बदलाव आया था।, और उस संक्रमण काल में भविष्यवाणी अभी भी चल रही थी। लेकिन जब आप प्रेरितिक युग से आगे निकल जाते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि वह कार्य अब आवश्यक नहीं रह गया है। वह वापस आ सकता है। फिर आपको यह प्रश्न करना होगा कि हम उस अवधि में कब

प्रवेश करते हैं। शायद यह समझना कुछ कठिन है। लेकिन उस बिंदु पर हां, रहस्योद्घाटन के उस उद्देश्य-केंद्रीय सुविधा आंदोलन के साथ अतिरिक्त रहस्योद्घाटन की संभावना है।

सातवीं. प्राचीन इज़राइल में पैगंबर और पंथ आइए यहां अपने अगले विषय पर चलते हैं, रोमन अंक VII., "प्राचीन इज़राइल में पैगंबर और पंथ।" इस विषय पर कुछ भी कहने से पहले हमें संभवतः "पंथ" को परिभाषित करना चाहिए। यहां पंथ का उपयोग इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों के लिए तकनीकी अर्थ में किया जाता है। पैगम्बरों का पुराने नियम के धार्मिक अनुष्ठान के अनुष्ठान कार्यों से क्या संबंध था? क्या वे मंदिर और उनके अनुष्ठानों, बलिदानों और त्योहारों के आधिकारिक पदाधिकारी थे जो मंदिर में किए जाते थे? पिछली शताब्दी में इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि पैगम्बर इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों से कैसे संबंधित थे। क्या वे आधिकारिक पंथ पदाधिकारी थे या वे पंथ के विरोधी थे? पंथ के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या था? पंथ का उपयोग इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों के अर्थ में किया जाता है, न कि यहोवा के साक्षियों या मॉर्मन या उस जैसी चीजों के अर्थ में।

क. यह दृष्टिकोण कि पैगंबर पंथ-विरोधी थे, आपने देखा कि आपकी रूपरेखा में तीन शीर्षक हैं: ए., "यह दृष्टिकोण कि पैगंबर पंथ-विरोधी थे," यानी, वे अनुष्ठानों के पालन और बाहरी प्रकार की पूजा के विरोधी थे। ; बी। इसके विपरीत है, "भविष्यवक्ता सांस्कृतिक पदाधिकारी थे जो पुजारियों की तरह ही मंदिर में कार्यरत थे"; और सी., जो मुझे लगता है वह चित्रण है जो हमें पुराने नियम से मिलता है, "वे न तो पंथ-विरोधी थे और न ही पंथ पदाधिकारी थे, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे।" आइए उन 3 शीर्षकों पर नजर डालें।

1. यह दृष्टिकोण कि पैगम्बर पंथ-विरोधी थे पहला, यह विचार कि पैगम्बर पंथ-विरोधी थे। 1. दृष्टि का विवेचन. 20^{वीं} शताब्दी के अधिकांश समय में, विशेष रूप से मुख्यधारा की बाइबिल विद्वता में, इस बात की वकालत की गई कि पैगम्बर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। ऐसा नहीं है कि वे पंथ या पंथ के किसी विशेष रूप के दुरुपयोग के खिलाफ थे, लेकिन वे इस तरह से पंथ के खिलाफ थे। इस दृष्टिकोण के समर्थकों ने कहा कि भविष्यवक्ताओं ने ईश्वर की पूजा को बढ़ावा दिया जिसमें अपने

पड़ोसी से प्यार करना, सामाजिक न्याय के लिए चिंता और उच्च नैतिक मानकों का अभ्यास शामिल था। इसलिए, इस दृष्टिकोण के अनुसार, भविष्यवक्ताओं ने नैतिकता को न केवल पंथ से ऊपर रखा, बल्कि पंथ के स्थान पर भी रखा। भगवान जो चाहते थे वह अनुष्ठान नहीं था। ईश्वर ऐसे लोगों को चाहता था जो न्यायपूर्ण कार्य करें, अपने पड़ोसियों से प्रेम करें और गरीबों पर अत्याचार का विरोध करें। उस दृष्टिकोण के समर्थकों में से एक जर्मन विद्वान पॉल बोल्ज़ थे जिन्होंने *मूसा और उनका कार्य नामक* पुस्तक लिखी थी। उस पुस्तक की मूल थीसिस यह है कि भविष्यवक्ताओं ने इज़राइल से कहा कि वह वापस लौट आए, इस मोज़ेक धर्म को प्राप्त करें, जिसे उन्होंने "पंथ-विहीन" कहा था। उन्होंने कहा कि इज़राइल में सांस्कृतिक गतिविधि का उदय कनानी प्रभाव के माध्यम से हुआ। इज़राइली पूजा में कनानी धार्मिक प्रथाओं के अनुकूलन ने सच्चे धर्म की मोज़ेक ऊंचाइयों में गिरावट का गठन किया था। अब बोल्ज़ ऐसा कैसे कह सकते थे। जब आप पेंटाटेच पढ़ते हैं तो इसमें सभी प्रकार के बलिदानों, पुजारियों के कर्तव्यों और कौन से त्योहार मनाए जाने चाहिए, इसके बारे में सभी प्रकार के विधान हैं। वह सब सांस्कृतिक सामग्री है। वह कैसे कह सकता था कि मोज़ेक धर्म पंथ-विहीन था? वैसे वह वेलहाउज़ेन और उन लोगों का अनुयायी था जो कहते थे कि पेंटाटेच में सभी पुरोहित सामग्री देर से, निर्वासन के बाद की थी। उनका दावा है कि ये पैगंबर ही थे जो नैतिक एकेश्वरवाद के महान प्रवर्तक थे। पैगम्बरों के बाद ही इस प्रकार की सभी अनुष्ठान सामग्री इतनी प्रमुख हो गई और इसका श्रेय मूसा को दिया गया। लेकिन मूसा के समय में, उनके अनुसार, इस्राएलियों का धर्म पंथ-विहीन था। तो विचार यह था कि इज़राइल ने कनानियों से, बुतपरस्त लोगों से उनका पंथ छीन लिया और इसलिए भविष्यवक्ताओं ने इसका विरोध किया। वे नहीं चाहते थे कि इसके स्थान पर केवल एक शुद्ध व्यवस्था कायम हो, बल्कि वे सामाजिक न्याय का अभ्यास चाहते थे जो सच्चा धर्म था।

अपने उद्धरण पृष्ठ 10 को देखें। इसमें लुडविग कोहलर का भी एक पैराग्राफ है जो इसी विचार का था। वह कहते हैं, “हालाँकि यह पंथ कोई नई चीज़ नहीं है और न ही इज़राइल की रचना है; यह अब भी यहोवा का रहस्योद्घाटन है। यह विजित भूमि के पारंपरिक पंथ का एक संयोजन है। सिर्फ इसलिए कि पंथ एक तरह से जातीय जीवन का हिस्सा है, भविष्यवक्ता हमेशा इसके खिलाफ सवालिया निशान लगाते रहे हैं, इसके औचित्य पर संदेह करते रहे हैं और इसे खारिज करते रहे हैं।

आमोस 5:25, "क्या तुम चालीस वर्ष तक जंगल में मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे।" यह प्रश्न उत्तर के लिए "नहीं" की अपेक्षा करता है, जो ऐतिहासिक रूप से गलत है लेकिन जो इस हद तक सही है - कि यह भगवान नहीं बल्कि मनुष्य थे जिन्होंने पंथ की स्थापना की थी। हम पंथ कहते हैं, क्योंकि पुराने नियम में पंथ लगभग बलिदान के समान है; इसमें इसके अलावा और कुछ नहीं है, सबसे बढ़कर इसमें शब्द की कोई उद्घोषणा नहीं है। 'जिस दिन मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन होमबलि वा मेलबलि के विषय में न तो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से कुछ कहा, और न उन्हें आज्ञा दी।' यिर्मयाह 7:22. बयान स्पष्ट और बिना शर्त है. बलि प्रथा की उत्पत्ति का श्रेय ईश्वर को नहीं दिया जाता। उसकी इच्छा केवल इसके नियमन में है, "तुम्हारे इतने सारे बलिदान किस प्रयोजन के लिये हैं? मैं मेढ़ों के होमबलि से परिपूर्ण हूँ। जब तू मेरे साम्हने आया, तो तुझ से यह किस ने चाहा? यशायाह 1:11-12. अब इस प्रकार के कई और अंश उद्धृत किये जा सकते हैं और वे महत्वपूर्ण हैं।"

2. इस दृष्टिकोण के समर्थन के लिए धर्मग्रंथ प्रस्तुत किया गया कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। आइए 2 पर चलते हैं, क्योंकि उद्धरण सीधे 2 में जाते हैं। " इस दृष्टिकोण के समर्थन के लिए धर्मग्रंथ प्रस्तुत किया गया कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। धारा।" लुडविग कोहलर ने जिन ग्रंथों का उल्लेख किया है उनमें से कुछ का मैं फिर से उल्लेख करूंगा लेकिन मैं आपको कई मुख्य अंश देना चाहता हूँ। पहला यशायाह 1:11-17 है। यशायाह कहता है, "तुम्हारे इतने सारे बलिदान मेरे लिए क्या हैं?" प्रभु कहते हैं. 'मेरे पास होमबलियों, मेढ़ों और मोटे पशुओं की चर्बी बहुत है; मुझे बैलों, मेमनों, और बकरियों के खून से कोई खुशी नहीं है। जब तू मेरे सामने उपस्थित होने को आता है, तो तुझ से यह, मेरी अदालतों को रौंदने की बात किसने पूछी है? निरर्थक प्रसाद लाना बंद करो! तेरी धूप मेरे लिये घृणित है। नये चाँद, विश्रामदिन और सभाएँ—मैं तुम्हारी दुष्ट सभाएँ सहन नहीं कर सकता। मेरे मन को तेरे नये चाँद के पर्व और तेरे नियत पर्वों से घृणा है। वे मेरे लिये बोझ बन गये हैं; मैं उन्हें सहन करते-करते थक गया हूँ।' जब तू प्रार्थना के लिये हाथ फैलाए, तब मैं तुझ से आंखें फेर लूंगा; चाहे तुम बहुत प्रार्थना करो, तौभी मैं न सुनूंगा। तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं! अपने आप को धोकर स्वच्छ करो। अपने बुरे काम मेरी दृष्टि से दूर करो; गलत करना बंद करो, सही करना सीखो;

न्याय मांगो, उत्पीड़ितों की रक्षा करो। अनाय का मुक़दमा उठाओ, विधवा का मुक़दमा लड़ो।” इसलिए यशायाह जैसी स्वीकारोक्ति का उपयोग यह दिखाने के लिए किया जाता है कि भविष्यवक्ता पंथ के विरोधी थे। वे जो चाहते थे वह सामाजिक न्याय था - इन सभी रीति-रिवाजों से दूर।

आमोस 5:21-27 कहता है, “मैं तुम्हारे धार्मिक पर्वों से घृणा करता हूँ, मैं उनका तिरस्कार करता हूँ; मैं आपकी सभाओं को बर्दाश्त नहीं कर सकता. चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि लाओ, तौभी मैं उन्हें ग्रहण न करूँगा। यद्यपि तुम उत्तम मेल-प्रसाद लाते हो, तौभी मैं उन पर कोई ध्यान नहीं दूँगा। अपने गानों के शोर से दूर! मैं तेरी वीणाओं का संगीत नहीं सुनूँगा। परन्तु न्याय को नदी की नाई, और धर्म को कभी न बहनेवाली धारा के समान बहने दो!” फिर एक अलंकारिक प्रश्न और इसका उपयोग अक्सर इस पंथ-विरोधी स्थिति का समर्थन करने के लिए किया जाता है। “हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे? तू ने अपने राजा का मन्दिर, और अपनी मूरतों का आसन, और अपने देवता का तारा, जिसे तू ने अपने लिये बनाया है, ऊँचा कर दिया है। इस कारण मैं तुम्हें दमिश्क के पार बंधुआई में भेज दूँगा, यहोवा जिसका नाम सर्वशक्तिमान है, उसका यही वचन है। “परन्तु क्या तुम मेरे लिये जंगल में बलि ले आए?” एक अलंकारिक प्रश्न के लिए उत्तर “नहीं” की आवश्यकता प्रतीत होती है। अब क्यों ला रहे हो?

होशे 6:6 "क्योंकि मैं बलिदान नहीं, दया चाहता हूँ, होमबलि से अधिक परमेश्वर का प्रगट होना चाहता हूँ।"

मीका 6:6-8: “मैं क्या लेकर यहोवा के साम्हने आऊँ, और महान परमेश्वर के साम्हने दण्डवत् करूँ? क्या मैं होमबलि और एक वर्ष के बछड़े लिये हुए उसके साम्हने आऊँ? क्या यहोवा हजारों मेढ़ों और दस हजार तेल की नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के बदले में अपने पहिलौठे को, और अपने प्राण के पाप के बदले में अपने शरीर का फल चढ़ाऊँ? हे मनुष्य, उस ने तुझे दिखा दिया, कि क्या अच्छा है। और भगवान को आपसे क्या चाहिए? न्यायपूर्वक कार्य करना, दया से प्रेम करना और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना।”

यिर्मयाह 7:21-23 “इस्राएल का परमेश्वर, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, आगे बढ़ो,

अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में मिलाओ, और मांस तुम ही खाओ! क्योंकि जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उनको होमबलि और मेलबलि के विषय में केवल आज्ञा ही नहीं दी, कि जो कुछ इब्रानी भाषा में है वह न्याय नहीं है। हिब्रू में यह कहा गया है. "जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उन्हें होमबलि के विषय में आज्ञा न दी। परन्तु मैं ने उन्हें यह आज्ञा दी, कि मेरी मानो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे। उन सब मार्गों पर चलो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, कि तुम्हारा भला हो।

तो वे कुछ मजबूत ग्रंथ हैं जिन पर यह विचार है कि भविष्यवक्ताओं ने पंथ का विरोध किया था और न केवल पंथ का कुछ दुरुपयोग या पंथ का गलत रूप या अभ्यास बल्कि स्वयं पंथ का भी विरोध किया था। वे मूल रूप से इस पंथ के विरोधी थे और इसे प्रतिस्थापित होते देखना चाहते थे।

1 शमूएल 15 में जब शाऊल जानवरों को बचाने के अपने कार्यों को सही ठहराने की कोशिश कर रहा है, तो भगवान ने कहा "बलिदान करने से आज्ञापालन करना बेहतर है।" इसलिए भविष्यवक्ताओं के लिए यह कोई नया विचार नहीं है।

चलिए "आकलन" पर चलते हैं। लेकिन शायद बेहतर होगा कि हम पहले एक ब्रेक ले लें।

प्रतिलेखन: केली सैंडविक , एशले बुसिव , यूनबिन चो,
डेनियल शैफ़र और पीटर कांग (संपादक)
संपादित: टेड हिल्डेब्रांट और बिल गेट्स
बिल गेट्स द्वारा पुनः सुनाया गया